

मुख्य जनसंपर्क अधिकारी का कार्यालय  
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

प्रेस विज्ञप्ति

**जामिया ने देशभक्ति के जोश के साथ 80वां स्वतंत्रता दिवस मनाया; केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी  
मुख्य अतिथि के तौर पर हुए शामिल**

नई दिल्ली, 15 अगस्त, 2026

नई दिल्ली: जामिया मिल्लिया इस्लामिया (जेएमआई) ने आज देशभक्ति के जोश और भव्यता के साथ 80वां स्वतंत्रता दिवस मनाया। डॉ. एम.ए. अंसारी ऑडिटोरियम में आयोजित मुख्य समारोह में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (MSME) मामलों के माननीय केंद्रीय मंत्री श्री जीतन राम मांझी मुख्य अतिथि के तौर पर शामिल हुए। इस अवसर पर जेएमआई के कुलपति प्रो. मजहर आसिफ़ और रजिस्ट्रार प्रो. मो. महताब आलम रिज़वी भी मौजूद थे।

कार्यक्रम की शुरुआत एनसीसी कैडेट्स द्वारा मुख्य अतिथि को 'कार्टर गार्ड' सलामी देने के साथ हुई। इसके बाद राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया और राष्ट्रगान गाया गया, जिससे माहौल में गंभीरता, गर्व और देशभक्ति की भावना भर गई।

औपचारिक कार्यक्रम में पवित्र आयतों का पाठ और 'जामिया तराना' की प्रस्तुति हुई, जो विश्वविद्यालय की समृद्ध परंपराओं और 'विविधता में एकता' के मूल्यों को दर्शाती है। कुलपति और रजिस्ट्रार ने छात्र कल्याण डीन प्रो. नीलोफर अफ़ज़ल के साथ मिलकर श्री मांझी को शॉल, स्मृति-चिह्न और पौधा भेंट कर सम्मानित किया। सम्मान और आभार के प्रतीक के तौर पर केंद्रीय मंत्री का एक चित्र भी भेंट किया गया।

विशिष्ट अतिथियों और उपस्थित लोगों का स्वागत करते हुए, जेएमआई की छात्र कल्याण डीन प्रो. नीलोफर अफ़ज़ल ने अपने संबोधन में याद दिलाया कि जामिया का इतिहास भारत के इतिहास से गहराई से जुड़ा है और यहाँ हमारे प्यारे तिरंगे को फहराते हुए न केवल देखा जाता है, बल्कि उसे महसूस भी किया जाता है।

माननीय केंद्रीय मंत्री के साथ उनकी टीम के सदस्य श्री दानिश रिज़वान और श्री सुरेंद्र प्रसाद पंत भी मौजूद थे। यह कार्यक्रम जेएमआई के छात्र कल्याण डीन कार्यालय की देखरेख में आयोजित किया गया था। सभा को संबोधित करते हुए, केंद्रीय मंत्री श्री जीतन राम मांझी ने एक मज़दूर परिवार में घोर गरीबी में पले-बढ़े होने से लेकर मुख्यमंत्री और अब भारत सरकार में केंद्रीय मंत्री बनने तक की अपनी असाधारण जीवन यात्रा के बारे में बात की। उन्होंने अपने निजी संघर्षों को साझा किया, जो उन्हें लगा कि बड़ी संख्या में साथी भारतीयों की जीवन-चुनौतियों को दर्शाते हैं। उन्होंने विशेष रूप से गरीबी उन्मूलन के मुद्दे पर बात की और इस दिशा में अपने मंत्रालय के प्रयासों की सराहना की। राष्ट्र-निर्माण में युवाओं की अहम भूमिका पर ज़ोर देते हुए, श्री मांझी ने कहा, "टेक्नोलॉजी अवसरों के दरवाज़े खोल सकती है, लेकिन अकेले यह सफलता सुनिश्चित नहीं कर सकती। सच्ची सफलता लगातार कड़ी मेहनत, प्रतिबद्धता और दृढ़ता से मिलती है।" उन्होंने छात्रों को केवल नौकरी खोजने के बजाय उद्यमी सोच विकसित करने और नौकरी देने वाले (जॉब क्रिएटर) बनने के लिए प्रोत्साहित किया, जो दूसरों को सशक्त बना सकें।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के 2047 में आज़ादी की 100वीं वर्षगांठ तक भारत को दुनिया की अग्रणी आर्थिक महाशक्ति बनाने के विज़न का ज़िक्र करते हुए, श्री मांझी ने MSME सेक्टर को इस विज़न की रीढ़ बताया। उन्होंने बताया कि यह सेक्टर भारत की GDP में लगभग 30.1 प्रतिशत का योगदान देता है और समावेशी आर्थिक विकास को आगे बढ़ाने में अहम भूमिका निभाता है।

युवाओं से "सोशल मीडिया को अपनी ताकत बनाएं, कमज़ोरी नहीं" का आग्रह करते हुए, केंद्रीय मंत्री ने छात्रों को कौशल हासिल करने, नए विचार विकसित करने, उद्यमिता अपनाने और स्थानीय उत्पादों व विचारों को वैश्विक बाज़ारों तक ले जाने की दिशा में काम करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने उनसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डिजिटल मार्केटिंग जैसी उभरती टेक्नोलॉजी से खुद को लैस करने का भी आह्वान किया ताकि वे अपने अवसरों को बढ़ा सकें और वैश्विक अर्थव्यवस्था में अपनी पहचान बना सकें। श्री मांझी ने करोड़ों परिवारों, खासकर महिलाओं, को समर्थन देने वाली विभिन्न MSME योजनाओं के साथ-साथ अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और समाज के अन्य वंचित वर्गों को लाभ पहुंचाने वाले कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला।

अपने संबोधन में, जेएमआई के वाइस चांसलर प्रो. मज़हर आसिफ़ ने आज़ादी के 80वें वर्ष के ऐतिहासिक अवसर पर शुभकामनाएं दीं। उन्होंने आज़ादी के दिन के महत्व और राष्ट्र के प्रति यूनिवर्सिटी समुदाय की ज़िम्मेदारियों पर अपने विचार साझा किए। क्षेत्रीय बोली में उनकी सहज बातचीत ने उन्हें तुरंत दर्शकों का चहेता बना दिया। अमीर खुसरो और अल्लामा इक़बाल जैसे महान कवियों का ज़िक्र करते हुए, प्रो. आसिफ़ ने भारत की सभ्यतागत विरासत की विशिष्टता और अनोखेपन के बारे में बात की। उन्होंने कहा, "भारत हमेशा से ही ज्ञान का केंद्र रहा है और कवियों व विद्वानों ने इसे असाधारण सुंदरता और ज्ञान की भूमि के रूप में सराहा है।" उन्होंने यह भी कहा कि आज़ादी का असली मतलब सभी नागरिकों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए मिलकर काम करना है।

जेएमआई के रजिस्ट्रार प्रो. मो. महताब आलम रिज़वी ने भारत के आज़ादी के संघर्ष के इतिहास को याद करते हुए दमनकारी औपनिवेशिक शासन के खिलाफ़ आज़ादी के दीवानों के हौसले और बलिदानों पर ज़ोर दिया। उन्होंने अंग्रेज़ों की "फूट डालो और राज करो" की नीति के बंटवारे वाले असर को रेखांकित किया, जिसने भारतीय समाज को जाति, धर्म, क्षेत्र और पहचान के आधार पर बांटने की कोशिश की और आखिरकार बंटवारे की त्रासदी का कारण बनी। महात्मा गांधी और जामिया मिलिया इस्लामिया के संस्थापकों में से एक हकीम अजमल खान के योगदान को याद करते हुए, प्रो. रिज़वी ने ज़ोर दिया कि सच्ची आज़ादी राजनीतिक संप्रभुता और आर्थिक आज़ादी से कहीं बढ़कर है। उन्होंने कहा कि इसकी जड़ें समाज के सभी वर्गों के लिए न्याय, समानता, सामाजिक सद्भाव और सामूहिक कल्याण में होनी चाहिए।

कार्यक्रम के अगले क्रम में जामिया के स्कूलों द्वारा एक सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किया गया। इस कार्यक्रम में जामिया के सभी स्कूलों की सांस्कृतिक और कलात्मक प्रस्तुतियों का शानदार संगम देखने को मिला। मुशीर फातिमा नर्सरी स्कूल ने एक दिलचस्प एक्शन सॉन्ग पेश किया, जिसमें नन्हे प्रतिभागियों का उत्साह और मासूमियत झलक रही थी। इसके बाद एक शानदार संगीत कार्यक्रम हुआ, जिसने इस मौके के जश्न के माहौल को और बढ़ा दिया। चाइल्ड गाइडेंस सेंटर, डॉ. ज़ाकिर हुसैन मेमोरियल वेलफेयर सोसाइटी के विशेष ज़रूरतों वाले बच्चों की एक खास प्रस्तुति ने उनके असाधारण हुनर, आत्मविश्वास और भागीदारी की भावना को उजागर किया। मिडिल स्कूल ने महिला स्वतंत्रता सेनानियों पर आधारित एक सार्थक प्रस्तुति दी, जिसमें भारत की आज़ादी की लड़ाई में अहम भूमिका निभाने वाली महिलाओं के साहस

और योगदान को याद किया गया। जामिया गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल ने "स्वर्णिम भारत – कल आज कल" नाम का एक नृत्य-नाटक पेश किया, जिसमें अलग-अलग दौर से गुज़रते भारत के सफ़र और देश की समृद्ध विरासत व बदलते समय को दिखाया गया। सैयद आबिद हुसैन सीनियर सेकेंडरी स्कूल ने एक दिल को छू लेने वाली कव्वाली पेश की, जिसने जश्न में पारंपरिक और आध्यात्मिक रंग भर दिया। कार्यक्रम का समापन जामिया सीनियर सेकेंडरी स्कूल (JSSS) द्वारा ब्रिगेडियर मोहम्मद उस्मान पर आधारित एक विशेष जीवनी-नाटक के साथ हुआ, जिसमें उनके असाधारण साहस, देशभक्ति और देश के प्रति समर्पण को दिखाया गया। इस जश्न में जामिया की अपने छात्रों में देशभक्ति, एकता, साहस और सामाजिक ज़िम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता दिखी, साथ ही उन्हें अपनी रचनात्मकता और हुनर दिखाने का मंच भी मिला। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ, जिससे जश्न का गरिमापूर्ण समापन हुआ और आज़ादी, एकता, शांति और राष्ट्र सेवा के साझा मूल्यों को फिर से दोहराया गया। जामिया मिल्लिया इस्लामिया में 80वें स्वतंत्रता दिवस का जश्न शाम तक जारी रहा। इसके तहत 15 अगस्त, 2026 को शाम 7:00 बजे डॉ. एम. ए. अंसारी ऑडिटोरियम में "जश्न-ए-आज़ादी" का आयोजन किया गया, जिसमें दिल को छू लेने वाले संगीत और उत्सव का माहौल था।

इस खास शाम के कार्यक्रम में जेएमआई के माननीय कुलपति प्रो. मज़हर आसिफ़, रजिस्ट्रार प्रो. मो. महताब आलम रिज़वी और डीन (छात्र कल्याण) प्रो. नीलोफ़र अफ़ज़ल की गरिमामयी उपस्थिति रही।

शाम का मुख्य आकर्षण नियाज़ी निज़ामी ब्रदर्स की दिलकश संगीत प्रस्तुति थी, जिसने स्वतंत्रता दिवस की भावना के साथ संगीत और जश्न को एक साथ पिरोया। इस कार्यक्रम ने जामिया परिवार के सदस्यों और मेहमानों को संगीत और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के माध्यम से देश की आज़ादी का जश्न मनाने का मौका दिया।

इस तरह, दिनभर चले इन समारोहों में राष्ट्रीय ध्वजारोहण फहराने की रस्म की गंभीरता, आज़ादी से जुड़े मूल्यों और ज़िम्मेदारियों पर चिंतन, जामिया के छात्रों की रचनात्मक प्रतिभा और दिल को छू लेने वाले संगीत की शाम शामिल रही। ये सभी चीज़ें विश्वविद्यालय की समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा और 'विविधता में एकता' की भावना को दर्शाती हैं।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया में 80वें स्वतंत्रता दिवस के जश्न ने आज़ादी, एकता, विविधता, शिक्षा, सामाजिक ज़िम्मेदारी और राष्ट्र-निर्माण के मूल्यों के प्रति विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता को फिर से दोहराया।

प्रो. साइमा सईद  
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी